रात्री क्लास ओमशांति 6.9.67

बच्चों को निर्भय भी बनना है। भयभीत नहीं होना चाहिए। बाप की भी महिमा करते हैं ना। तो उनके तुम बच्चे भी निर्भय होने चाहिए। बहुत आफतें आनी हैं। जितनी2 बाप की याद उतनी शक्ति मिलती जावेगी। निर्भय होते जावेंगे। अपने दिल को पक्का करते जाओ। तूफान आदि की परवाह नहीं हो। बाम्बे वालों को सुनाया है कि तूफान है ,बरसात है। तो बोले कि कुछ भी हो हम तो बाबा पास आते हैं ना। बाबा के पास आकर प्राण छूट गये तो अच्छा ही है। ज्ञान सागर का यह सच्चा घाट है। ज्ञानामृत बहुत मिल रहा है। तो यहां पर ही प्राण तन से निकले तो और ही अच्छा है। बच्चे समझते हैं कि हम सदैव निरोगी धनवान भी बनेंगे। पवित्र भी रहेंगे। पुरुषार्थ में कमी नहीं होनी चाहिए। नहीं तो पद कम हो जावेगा। साधु–सन्यासी तो कब भी चार्ट रखने लिए नहीं कहते हैं। बाप कहते हैं कि याद सिर्फ बाप को करना है। जितना2 याद करेंगे कट उतरती जावेगी। नहीं तो बहुत कष्ट होगा। पिछाड़ी को बहुत सा. होंगे। इन बच्चों को पाकिस्तान में तो बहुत सा. होते थे। यह तो उस खुशी में ही है। मनुष्यों को तो बहुत डर था। तो तुम बच्चों को भी निर्भय होना है। बाप कहते हैं मैं जो हूं ,जैसा हूं सो तुमने ही जाना है। तुमको परिचय दिया है। तुम बच्चों को ज्ञान मिल रहा है। तुम्हारे लिए है रोशनी। वो तो अज्ञान नींद में सोये हुए हैं। ज्ञान देने वाला तो ज्ञान सागर एक ही है। बाकी शास्त्रों का ज्ञान कोई ज्ञान नहीं है। वो सब है भक्ति। तुम जानते हो कि आधा कल्प है भक्ति। आधा कल्प ज्ञान। यह तो है हद के रात और दिन। बेहद का बाप तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। बेहद का ही सन्यास करवाते हैं। अपने को आत्मा समझकर ... और बाप को याद करो। जो कुछ भी देखते हैं वो सब खलास हो जाना है। हमको बाबा के पास जाना है। जब तक कि राजधानी स्थापन हो तब तक तो हम पुरानी दुनियां में ही हैं। फिर हम आवेंगे राज्य करने। माया पर जीते जीत है, माया पर हारे हार। हारे थे अब जीत पाते हैं। बाप कहते हैं कि जीता भी तुमने ही था। हारा भी तुमने है। और कोई धर्मवाला स्वर्ग का राज्य नहीं पाते हैं। देवी देवता धर्म वाले तो जो और धर्मों में चले गए हैं वो तो निकल आवेंगे। हिंदू धर्म तो है नहीं। क्रिश्चियन का क्रिश्चियस धर्म ही है। बदला नहीं है। यह देवी देवता धर्म वाले ही हिंदू बन गये हैं। पतित हो गए हैं। इसलिए ही अपने को देवता कहला नहीं सकते हैं। जब यह धर्म नहीं हो तभी तो स्थापन हो ना। क्रिश्चियन धर्म है ही है तो फिर स्थापन क्या होगा?देवी–देवता तो धर्म ही नहीं है। इसलिए ही फिर ऐसे स्थापन होता है। (बड़ के झाड़ का मिसाल) हम जब थे तो कोई दूसरा धर्म ही नहीं था। अभी और तो सभी धर्म हैं तो देवी–देवता है नहीं। फाउंडेशन है नहीं। अभी तुम बच्चे फाउंडेशन डाल रहे हो। फाउंडेशन डालने लिए भी सेरीमणी करते हैं। अब बाप ने फाउंडेशन तो लगाया है ना। बाकी स्वर्ग का उद्घाटन को तो तुम करेंगी ना। शिवबाबा तो उदघाटन करने लिए नहीं आवेंगे। जो बैठे हैं वो ही करेंगे। शिवबाबा उदघाटन करने नहीं आते हैं। बाकी जो अच्छी मेहनत करेंगे वो ही नये मकान में सुख पावेंगे। बाकी और सभी भक्ति की बातों को तो कान से निकाल दो। सिर्फ एक ही बात करनी है याद कि हम आत्मा हैं। बाप के पास जाना है। बाप को याद किया तो स्वर्ग में जरूर आवेंगे। ब्राह्मण बना तो स्वर्ग में जरूर आवेगा। भल ब्राह्मण बनकर फिर विकार में जाते हैं तो भी आवेंगे। कल्प2 ही फेल होता जावेगा। इसलिए ही बहुत खबरदारी चाहिए होती है। अपने को ही घाटा नहीं डालना चाहिए। श्रीमत पर नहीं चलने कारण ही घाटा पड़ता है। याद में मेहनत है। मुझे बाबा कितना पास में है। जैसे कि मैं उनकी गोद में हूं। वो मेरी गोद में है। फिर भी जैसी तुम याद करते हो वैसे ही मुझको भी करना पड़ता है। एकदम साथ2 में बैठा हूं तो भी भूल जाता हूं। ऐसे नहीं कि हम तो बाजू में हैं। नहीं ,वो तो कोई यात्रा नहीं है। याद करना ही पड़ता है। इतनी पास में हूं तो भी मेहनत बहुत करनी होती है। अच्छा, गुडनाइट।